ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

हिंदी कहानी में व्यक्ति और श्रीकांत वर्मा की कहानियाँ

मीनाक्षी रानी
शोधार्थी, पीएच० डी०
हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
9716918456, meenakshirani772@gmail.com

प्रत्येक व्यक्ति की अपनी–अपनी महत्त्वाकांक्षाएँ हैं। जब वह इन महत्त्वकांक्षाओं को पूरा का प्रयास करता है तब उसका सामना परिवार, समुदाय, समाज, और राष्ट्र आदि से होता है। जब व्यक्ति की आकांक्षा इनसे पृथक होती है तो टकराव पैदा होता है। इसी टकराव से 'द्वंद्व' पैदा होता है। व्यक्ति अपनी इच्छाएँ भी पूरा करना चाहता है और समाज से भी अलग नहीं होना चाहता। भारत में स्वतंत्रतापूर्व राष्ट्रभावना ही सर्वोपरि थी लेकिन स्वतंत्रता के बाद व्यक्ति की अवधारणा केन्द्र में आती है। सुरक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण समझी जाने वाली 'परिवार' नामक इकाई पर भी प्रश्नचिह्न दिखाई देने लगे। व्यक्ति परिवार में भी तनाव, असुरक्षा, अलगाव, अकेलेपन आदि से घिरा हुआ है। आधुनिक काल में व्यक्ति की मनोदशा व परिस्थितियाँ पहले की अपेक्षा काफ़ी बदल गयी है। 'व्यक्ति'(सं०) (पु०) का शाब्दिक अर्थ है "मनुष्य या आदमी"।[1] जैनेन्द्र 'व्यक्ति' पर विचार करते हुए कहते हैं कि **"व्यक्ति असल में क्या है? क्या वह प्रतीक ही है? अपने समय–समय और अपनी परिस्थिति में संश्लिष्ट एक प्रश्नचिह्न को, एक जिज्ञासा को लेकर वह उठा है। उसे उत्तर की खोज है। उसके भीतर कोई निजता होती तो जगत् से उनका नाता क्या बनता? पर जगत् से वह कुछ लेता और कुछ देता है। इसी में उसका निजत्त्व और व्यक्तित्व बनता है।"**[2] **'व्यक्तिवाद'** मुख्यतः पश्चिमी विचार है जो व्यक्ति की आत्मनिर्भरता व स्वतंत्रता पर बल देता है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को विशिष्ट व्यक्ति ठहराने की प्रवृत्ति है। "पाश्चात्य दर्शन में व्यक्तिवाद की समस्या सबसे पहले सोफिस्ट विचारकों के समय पाँचवीं शताब्दी ईसापूर्व के आस–पास उत्पन्न हुई जो मूलतः

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

सामाजिक समस्या थी जिसमें कुलीनों व योद्धाओं को ही सुख–सुविधाएँ उपलब्ध थी। कुलीन समाज परम्पराओं को दैवी बताकर सामान्य जनों के अधिकारों का अपहरण कर रहा था। सोफिस्टों के वयोवृद्ध प्रोतागोरस (480–410) ने सबसे पहले व्यक्ति के महत्त्व का प्रतिपादन किया।"[3] 'रैडिकल इंडीविज़ुअलिज़्म' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 17वीं शताब्दी के दार्शनिक **थॉमस हॉब्स**[4] ने किया। जॉन लॉक, जॉन स्टूअर्ट मिल और जॉन डीवी ने अपने समय की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और सैन्य स्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपने व्यक्तिवादी विचारों का प्रतिपादन किया।

हिन्दी कथा साहित्य में व्यक्ति का आगमन प्रेमचन्द की कहानी '**कफ़न**' में घीसू व माधव द्वारा होता है। इससे पहले समाज ही कथा साहित्य के केंद्र में था स्वयं प्रेमचन्द की कहानियों में समाज व राष्ट्रीय भावना ही मुख्य रही। 'कफ़न' कहानी में व्यक्ति टाइप वाली प्रकृति से बाहर दिखाई देता है। वह समाज के लिए नहीं अपने लिए जीता है। उसके निर्णय समाज द्वारा प्रभावित नहीं होते। इससे पहले प्रेमचन्द की कहानियों के पात्र समाज के लिए आदर्श भूमिका में खड़े दिखाई देते हैं लेकिन 'कफ़न' के मुख्य पात्र ऐसे नहीं है। वे प्रसव पीड़ा से तड़पती बुधिया के दुख में उसका साथ देने की बज़ाय आलू खाकर दावत मनाते हैं। "दोनों आलू निकाल–निकालकर जलते.जलते खाने लगे। कल से कुछ नहीं खाया था। इतना सब्र नहीं था कि उन्हें ठण्ड़ा हो जाने दे। कई बार दोनों की जबानें जल गई।"[5] माधव की पत्नी प्रसव पीड़ा से तड़पकर मर जाती है लेकिन बाप. बेटे घीसू और माधव लोगों द्वारा कफ़न खरीदनें के लिए दिए पैसों का इस्तेमाल पेट भर भोजन करने के लिए करते हैं। भारतीय समाज की विडम्बनापूर्ण स्थिति पर भी प्रेमचन्द विचार करते हैं। "कैसा बुरा ज़माना आ गया है कि जिसे जीते जी तन ढकने को चीथड़ा भी नहीं मिले, उसे मरने पर नया कफ़न चाहिए।"[6] "दुनिया का दस्तूर है लोग बामनों को हज़ारों रुपये क्यों देते हैं? कौन देखता है? परलोक में मिलता है या नहीं।"[7] इसके बाद

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों में व्यक्ति को परिधि से केन्द्र की ओर लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। **"प्रेमचन्द की अधिकांश कहानियों के परम्परागत आदर्श, सामाजिक. राष्ट्रीय चेतना और समाज सुधार से प्रेरित मानववाद की तुलना में जैनेन्द्र की कहानियाँ एक बार ही सहज व्यक्ति की लिहाज़ा ज़्यादा कहानियाँ लगीं। उनके पात्र न टाइप या प्रतिनिधि मालूम होते थे, न किसी वाद या फ़ार्मूला से प्रेरित। वे हर तरह के नैतिक बोध के दबाव से मुक्त थे – एकदम सहज मानव।"**[8] जैनेन्द्र की कहानी **'जान्हवी'** में नायिका विवाह के लिए आए रिश्ते के प्रति अस्वीकृति व्यक्त करती है। ऐसा पूर्व की कहानियों में महिला पात्रों में नहीं देखा गया था। जान्हवी एक पत्र लिखकर इस रिश्ते के प्रति अपनी अनइच्छा व्यक्त करती है। "पत्र बड़ा नहीं था। सीधे–साधे ढंग से उसमें यह लिखा था कि आप जब विवाह के लिए यहाँ पहुँचेंगे तो मुझे प्रस्तुत भी पायेंगे। लेकिन मेरे चित्त की हालत इस समय ठीक नहीं है और विवाह जैसे धार्मिक अनुष्ठान की पात्रता मुझमें नहीं है। एक अनुगता आपको विवाह द्वारा मिल जाएगी। पर चाहिए कि वह जीवन संगिनी भी हो। वह मैं हूँ या हो सकती हूँ, इसमें मुझे बहुत सन्देह है। फिर भी आप चाहे आपके माता.पिता चाहें, तो प्रस्तुत मैं अवश्य हूँ। पर निवेदन यह है कि यदि मुझ पर से अपनी माँग उठा लेंगे, मुझे छोड़ देंगे, तो मैं ओर भी कृतज्ञ होऊँगी।"[9] व्यक्ति और समष्टि पर विचार करते हुए जैनेन्द्र लिखते हैं कि **"...व्यक्ति पर समष्टि का, एक पर दूसरे का, हर एक पर हर एक का जो प्रभाव पड़ रहा है, उसी के उद्घाटन के लिए साहित्य है।"**[10] **जैनेन्द्र** की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए **अज्ञेय** अपनी कहानियों में व्यक्ति के व्यक्तित्व को केन्द्र में लाते हैं। कहानी **'गैंग्रीन'** में यंत्रवत मनुष्य के रूप में मालती के वैवाहिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है। "मालती एक बिल्कुल अनैच्छिक, अनुभूतिहीन नीरस यन्त्रवत– वह भी थके हुए यन्त्र के से स्वर में कह रही है चार बज गये मानो इस अनैच्छिक समय गिनने–गिनने में ही उसका मशीन तुल्य जीवन बीतता है।"[11] मानव का यह यांत्रिक जीवन

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

उससे उसका असल व्यक्तित्त्व छीन रहा है। अज्ञेय और जैनेन्द्र के कथा.साहित्य में अंतर को बताते हुए रामचन्द्र तिवारी लिखते हैं कि **"दोनों में अंतर यह है कि जैनेन्द्र जहाँ गाँधी.दर्शन के आध्यात्मिक पक्ष को अधिक महत्त्व देने के कारण व्यक्ति के वैशिष्ट्य को परखने में एक सीमा बाँध लेते हैं, वहाँ अज्ञेय वैज्ञानिक यथार्थ में विश्वास करने के कारण विविध स्तरों पर व्यक्ति को देखते.परखते है।"**[12] "प्रेमचन्द की सामाजिक व्यापक विविधता के बीच जैनेन्द्र की यह सहज व्यक्ति और अज्ञेय की विशिष्ट व्यक्ति वाली दृष्टि अधिक नयी, अपनी और गहरी लगती थी....इनकी कहानियाँ भीतर से बाहर की ओर नहीं, बाहर से भीतर की ओर घटित होने लगी थी।"[13] "राजेन्द्र यादव ने जैनेन्द्र के इस व्यक्तिगत साधारण के बाने को प्रेमचन्द, प्रसाद और अज्ञेय की तुलना में बहुत ही असाधारण सहज कहा है।"[14] छायावादी युग के प्रमुख कवि निराला और प्रसाद की अधिकांश कहानियों में भी व्यक्ति की भूमिका समाज केन्द्रित थी। **निराला** की कहानी **'लिली'** में पद्मा अपने पिता की इच्छापूर्ति के लिए राजेन्द्र से (जिससे वह प्रेम करती है) विवाह नहीं करती। इस कहानी में सामाजिकता अधिक है। लिली यानी पद्मा पिता की इच्छा को पूरा करती है। **जयशंकर प्रसाद** की कहानियों में भी सामाजिक समस्यों पर विचार किया गया है। कहानी **'भिखारिन'** में भारतीय समाज की छूआछूत जैसी सामाजिक समस्या है। **'छोटा जादूगर'** एक कर्त्तव्य परायण बालक का चित्र प्रस्तुत करती है। कहानी **'दुखिया'** गरीबी और कहानी **'बेड़ी'** सामाजिक रिश्तों पर आधारित है। नयी कहानी में व्यक्ति को अधिक महत्त्व दिया गया है। "नयी कहानी ने निर्विवाद रूप से व्यक्ति चेतना को महत्त्व दिया है। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि नयी कहानी में समाज सर्वथा उपेक्षित है। व्यक्ति–चेतना के महत्त्व का तात्पर्य है– व्यक्ति के संदर्भ में समाज को देखना। प्रेमचन्द–युग का कलाकार समाज की बात करता था, सामाजिक सुधार का प्रश्न उठाता था, सामाजिक आन्दोलनों को मूर्त करता था। ऐसे व्यक्ति की मर्यादा

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

गौणरूप से मान्य थी। आज व्यक्ति को उसके परिवेश में देखा जा रहा है। प्रधानता व्यक्ति को ही दी जा रही है। समाज संदर्भित होकर सामने आता है।....कहानी पढ़ते हुए पहले हमारा ध्यान व्यक्ति पर जाता है। व्यक्ति खोया–खोया, टूटा–टूटा या अपने को अजनबी अनुभव करता हुआ दिखाई पड़ता है। उसकी इस मनःस्थिति का कारण सामाजिक विघटन है। इस प्रकार हम व्यक्ति से होकर समाज तक पहुँचते हैं।"[15]

श्रीकांत की कहानियों में घटना के सूक्ष्म रूप की अभिव्यक्ति ज़्यादा है। ये आज के युग को अभिव्यक्ति की जटिलता का युग कहते हैं जिसमें अनुभूति को सही–सही सम्प्रेषित करना टेढ़ी खीर है। इनकी मान्यता है कि कविता और कहानी के अनुभव के स्तर अलग.अलग हैं। सातवें दशक की सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित इनकी कहानियों के पात्र मोहभंग, मृत्युबोध, नियति, पराजय, घुटन, निराशा, उलझन, बेबसी आदि से घिरे हैं। विभिन्न रिश्तों में बंधकर भी व्यक्ति का अकेलापन दूर नहीं होता। पात्रों की संख्या इनकी कहानियों में बहुत कम है। कहानी मुख्य नायक के इर्द.गिर्द ही घूमती है। इनकी कहानियों में मुख्य नायक की आकांक्षा है– 'मुक्ति'। वह घुटन भरे वातावरण से मुक्ति चाहता है। वह स्वतंत्रता के साथ जीना चाहता है परन्तु विभिन्न व्यवस्थाएँ उसे पूर्णतः मुक्त नहीं होने देती। मनुष्य के खुलकर जीने की आकांक्षा को स्वयं उसके द्वारा बनायी व्यवस्था पूरा नहीं होने देती। व्यक्ति परिवार में भी अकेलेपन का अनुभव करता है। ऑफ़िस उसे कैदखाना लगता है और विभिन्न रिश्तें उसे अनचाहा शोर लगते हैं जिससे वह मुक्ति चाहता है। झाड़ी, ट्यूमर, बॉस, परिणय, दूसरे के पैर आदि कहानियों में नायक अपनी व्यवस्थाजन्य परिस्थितियों के सामने असहाय है। वह खुलकर न जी पाने के लिए विवश है। समाज में पारिवारिक व रिश्तों की व्यवस्थाएँ हैं जो व्यक्ति को स्वतंत्र निर्णय नहीं लेने देती। परिवार व रिश्तों के दबाव में व्यक्ति स्वयं को ऐसा प्रस्तुत करने के लिए मजबूर है जैसा वह असल में नहीं होता। अनिर्णय की

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

स्थिति में नायक स्वयं को उलझा हुआ महसूस करता है। नायक हमेशा द्वंद्व में रहता है और झाड़ी न लाँघ पाने की स्थिति में विवश है। 'झाड़ी' कहानी में अखिल, 'साथ' कहानी में कपिल, **'प्रस्थान'** कहानी में राजीव और रमा, 'ट्यूमर' कहानी में अनिरुद्ध, 'बॉस' कहानी में नरेन्द्र आदि किसी न किसी रूप में व्यवस्था जन्य परिस्थितियों के कारण उलझन और तनाव में है। न चाहते हुए ऐसी स्थितियों में घिरे हैं जिनमें उनका दम घुटता है। कहानी **'घुटन'** में आरंभ से लेकर अंत तक मृत्युबोध है। श्रीकांत वर्मा के जीवन की विभिन्न कठिन परिस्थितियों का बोध इनकी कहानियों में होता है।

इनकी कहानियों के पात्र यदि किसी बंधन में बंधते हैं तो भी वे अकेले हैं और यदि बंधनों से दूर जाते हैं तो भी उन्हें इस अकेलेपन का बोध होता है। परिचितों के बीच भी अपरिचित नायक लगातार अपनी 'मुक्ति' के लिए प्रयास करता है लेकिन अंत में वह इन्हीं बंधनों में बंधा रहता है। 'मुक्ति की आकांक्षा' कभी साकार नहीं हो पाती।

कहानी **'झाड़ी'** सबसे ज़्यादा चर्चा का विषय रही। 'झाड़ी' अवरोध और रुकावट का प्रतिनिधित्व करती है। इसकी छाया इनकी सभी कहानियों में देखी जा सकती है। 'झाड़ी' कहानी में अखिल झाड़ी को पार नहीं कर पाता। वह ऑफ़िस व्यवस्था में बंधकर जीने के लिए मजबूर है। **'ट्यूमर'** कहानी का नायक अकेलेपन के बोध से ग्रस्त है। कहानी **'प्रस्थान'** में परस्पर विरोधी स्वभाव वाले स्त्री पुरुष जो पति.पत्नी हैं विवाह के बंधन को ढो रहे हैं। कहानी के पात्र परस्पर बड़ा दिखने के लिए लगातार प्रयत्न करते हैं। इनकी कहानियों में सुख, उत्साह, उल्लास जैसे तत्त्वों का अभाव है। निराशा, घुटन, पराजय का भाव इनकी कहानियों में सर्वत्र है। प्रेम संबंधों में भी व्यक्ति अकेला महसूस करता है।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

श्रीकांत वर्मा छोटी–सी घटना और मनःस्थिति को कहानी कला में प्रस्तुत करने वाले सफल कथाकार है। व्यक्ति और सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों का बोध कराती इनकी कहानियों में व्यक्ति अपने असल व्यक्तित्व को छिपाकर परिस्थितियों से समझौता कर लेता है। इन्होंने अपनी डायरी में भी लिखा है कि उनके जीवन में सुख रूपी वसंत कभी नहीं आया जिसकी तलाश वे हमेशा करते रहे। इनकी कहानियों के पात्र भी इसी सुख रूपी वसंत की तलाश में है। **"मैं वसन्त की तलाश में हूँ। लेकिन मेरी रचनाओं में वसंत कभी नहीं आया। उनमें ग्लानि है, संताप है, दुःख है, पीड़ा है, आक्रामकता है, भय है, सिनिसिज़्म है, मृत्यु है। यहाँ तक कि मेरी कहानियों और उपन्यास के पात्र तक प्रेम करते हुए भी अकेले हैं। समर्पण में असमर्थ हैं, भयाक्रान्त है और सिर्फ़ मृत्यु उनकी प्रतीक्षा कर रही है। अगर मैं चाहूँ तो यह कह सकता हूँ कि यही इस युग का सत्य है लेकिन मैंने युग सत्य की तलाश का दावा कभी नहीं किया। इसलिए सिर्फ़ इतना ही कहूँगा कि मैं जो और जैसे जिया उसका यही सत्य था।"**[16] ग्लानि, संताप, दुख, पीड़ा, आक्रामकता, भय, मृत्यु, नियति का बोध कराती इनकी कहानियों में नायक कहानी के अंत में मौन समझौता कर लेता है। व्यक्ति या नायक कितनी भी कोशिश कर ले वह अपनी नियति से नहीं बच सकता। यह बोध इनकी इस दौर की कविताओं में भी है।

क्यों कराह रहे हो?
कोई उपचार तुम्हें मणिकर्णिका से
नहीं बचा सकता।

(श्रीकांत वर्मा रचनावली–2, पृष्ठ 461)

इनकी कहानियों में व्यवस्था में क़ैद, अभिशप्त और खुलकर न जीने वाले विवश व्यक्ति की मनःस्थिति अभिव्यक्ति पाती है। जिनमें घटनाओं के सूक्ष्म रूप का उद्‌घाटन करते हुए आधुनिक मानव की परिस्थितियों व विडम्बनाओं का परिचय होता है। इनकी कहानियाँ केवल कहानियाँ नहीं बल्कि इनके जीवन संघषों व कठिन दौर का

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

जीवंत दस्तावेज़ है। जिसकी अभिव्यक्ति इन्होंने कहानियों के पात्रों की मनःस्थिति द्वारा की है। बतौर कहानीकार श्रीकांत वर्मा नई संवेदनाओं, नए भावों को वाणी देने वाले कहानीकार हैं। सातवें दशक की सामाजिक पस्थितियों और स्वयं इनके जीवन की आशा–निराशा से युक्त इनकी कहानियाँ इनके जीवन के संघर्ष व विभिन्न स्थितियों को व्यक्त करती हैं

संदर्भ –

1. हरदेव बाहरी (2011), हिन्दी शब्द कोश, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली
पृष्ठ 763
2. निर्मला जैन (2009), निबंधों की दुनिया जैनेन्द्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, (लेख व्यक्ति और टाइप), पृष्ठ 89
3. hi.m.wikipedioa.org/wiki/व्यक्तिवाद (5 मार्च 2015)
4. Redical individualism is spelled out first by the 17th century English philosopher Thomas Hobbes, a materialist in whose view human nature does not exist independently of social invention and cannot be known objectively. His influential metaphysics posited a kind of raw] barren- redical "atomic"- individualism: only pure particular material things- no general classes- exist in really. ….Hobbes believed the law of motion would at first lead to conflict] whereupon human intelligence would introduce social rules. This would improve on the state of nature. Individuals would thereafter behave in an orderly fashion. [TWO KINDS OF INDIVIDUALISM: A Critiqe of ethical subjectivism, By Tibor Machan, article page 1]
Link- www.libertarianimo.org>livros>tmci Tibor Machan, TWO KINDS OF INDIVIDUALISM: A Critiqe of ethical subjectivism
5. प्रेमचन्द रचनावली खण्ड-15, जनवादी प्रकाशन प्रा० लि० (कफ़न, प्रेमचन्द), पृष्ठ 402,
6. वही, पृष्ठ 404
7. वही, पृष्ठ 405
8. निर्मला जैन (1973), जैनेन्द्र की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 10
9. वही, पृष्ठ 121–122
10. निर्मला जैन (2009), निबंधों की दुनिया जैनेन्द्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (शीर्षक–व्यक्ति और टाइप), पृष्ठ 91
11. अज्ञेय (1975), मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, पृष्ठ 43
12. रामचन्द्र तिवारी (2006), हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 297
13. निर्मला जैन (1973), जैनेन्द्र की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 10
14. वही, पृष्ठ 15

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

15. रामचन्द्र तिवारी (2006), हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 301–302
16. अरविन्द त्रिपाठी (1995), श्रीकांत वर्मा रचनावली–2, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 31

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)